MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed"

The motion was adopted.

15.14 hrs.

DRUGS AND COSMETICS (AMENDMENT) BILL

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING (PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA): Sir, I beg to move:

> "That the Bill further to amend the Drugs and Cosmetics Act, 1940, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration".

This is a very small piece of legislation to extend the Drugs and Cosmetics Act to the State of Jammu and Kashmir. The whole purpose of the Drugs (Quality Control) Order is defeated if the legislation is not uniformly applicable throughout the country. Because of the constitutional limitation it could not be extended to Jammu and Kashmir. Now to see that this is extended to that part of the country as well, we have brought this legislation before the House.

The subject of the Drugs and Cosmetics Act falls under entry 19 of the Concurrent List which was made applicable to Jammu and Kashmir only in 1967. So, we have now brought this legislation to extend the provisions of that Act to Jammu and Kashmir. This is an enabling measure and I hope it will be passed unanimously. With these words, I move this motion.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Motion moved:

> "That the Bill further to amend the Drugs and Cosmetics Act, 1940 as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

श्री आर० वी० बड़े (खरगोन): ड्रग्ज एंड कास्मैटिक्स एमेंडमेंट बिल केवल इस उद्देश्य से लाया गया है कि इसको जम्मू-काश्मीर पर भी एप्लाई किया जा सके। मैं समझता हूं कि आर्टिकल 370 जो है इसका सवाल जनसंघ ने तथा दूसरे लोगों ने भी उठाया था और इसके बारे में रेजोल्यूशन भी रखा गया था कि इसको रिमूव किया जाए और इसको बड़ी भारी सपोर्ट भी मिली थी......

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is a separate thing. It is a larger thing.

SHRI R. V. BADE: I want to say that article 370 is there and that is why all this difficulty. That is my criticism.

यदि इस आर्टिकल को रिमूव कर दिया जाता तो इस प्रकार का बिल लाने की जरूरत नही पड़ती। जो भी बिल आप लाते हैं उसमें आप यह कह देते है एक्सैप्ट जम्मू एंड काश्मीर। जम्मू काश्मीर पर उसको लागू करने के लिए आप बाद में इस तरह से एमेंडिंग बिल लाते हैं। जम्मू काश्मीर पर इसको लागू करने में हमें कोई आपत्ति नही है। लेकिन साथ साथ आपने स्टेटमेंट आफ आब्जेक्ट्स एंड रीजन में लिखा है:

> The subject matter of that Act falls under entry 19 of the Concurrent List which has been made applicable to that State only in 1967 by the Constitution (Application to Jammu and Kashmir) Second Amendment Order, 1967.

कनकरेंट लिस्ट की एंट्री 19 को 1967 में जम्मू और काश्मीर पर एप्लाई कर दिया गया था। 1967 से अब तक शासन चुपचाप सोता रहा है। मैं यह जानना चाहता हूं कि इसकी क्या वजह है? इस बीच उसने एमेंडमेंट लाने की सोची क्यों नहीं?

दवाइयों आदि में एडलट्रेशन होता था। इस वास्ते आपने इसको रोकने के वास्ते कानून बनाया। ड्रग्ज एंड कास्मैटिक्स बिल का जिस प्रकार देश के अन्य भागों में परिपालन होता है उसी प्रकार का परिपालन जम्मू और काश्मीर में भी होगा तो भगवान ही भला करे। औषधियों की कीमतें बढ़ गई हैं। यहा अगर कीमतें बढ़ जाती है तो जम्मू और काश्मीर में आप इन कीमतों को कैसे कंट्रोल करेंगे। यहीं ही नही कर सकते हैं तो वहां कैसे करेंगे?

जितनी दवाइयां अमरीका से या फारेन से

[श्री आर० वी० बड़े]
आती हैं या फारेन कम्पनीज यहा बनाती हैं उनमे वे बहुत पैमा बनाती है।

MR. DEPUTY-SPEAKER : But that is about the main Act. This has the limited scope. That is a little outside the scope of this Bill.

श्री आर० वी० बड़े : ड्रग कंट्रोल तो है लेकिन उमका काम पगार लेना और बैठे रहना है। वे लोग पगार लेते हैं और बैठे रहते है। एम वी टैबलैट्स जो सोलह पैमे प्रति टैबलेट पड़ती है उसको माठ पैसे मे बेचा जाता है। यह जो पैमा है यह अमरीका जाता है, बाहर जाता है। आपने पेटेंट्स एक्ट बनाया। क्यों नही इस तरह की कम्पनियो का पेटेंट कैंसिल किया जाता है।

MR. DEPUTY-SPEAKER : This is outside the scope of this Bill.

SHRI R. V. BADE : This is the same criticism made in the Rajya Sabha which I have read.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I don't want to say anything which is said in the other House. I am only pointing out the scope of the Bill.

श्री आर० वी० बड़े : मैं अनुरोध करना चाहता हू कि जितनी भी दवाए अमरीका मे या बाहर से आती हैं उनकी तरफ आप ध्यान दे और पेटेंट ऐक्ट को आप इम्प्लेमेंट करें। इस काम को जल्दी किया जाना चाहिये। साथ ही जो प्राइसिस इनकी धीरे धीरे बढ़ रही है, उनको आप कंट्रोल करे।

इन शब्दों के माथ मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूं।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Shri Banerjee.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : Sir, let me get an opportunity to say something about this Drugs Act.

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is a little outside the scope of the present Bill. This is only an extension to the State of Jammu and Kashmir.

SHRI S. M. BANERJEE : I have only confined myself to the State of Jammu and Kashmir.

Sir, may I request the hon. Minister to realise that some of these adulterated drugs and spurious cosmetics will harm us. Suppose, the spurious lipsticks is used by the ladies. It will not harm her, but it will harm all of us.

AN HON. MEMBER : If Mrs. Banerjee uses this, then Mr. Banerjee will be in danger.

SHRI S. M. BANERJEE : The question is that we should do something to check this. I am sure the young Minister, Shri Chattopadhyaya will have a new vision and kindly see that the spurious drugs are banned.

My hon. friend, Shri Bade, said about life-saving drugs. What are the prices of these life-saving drugs in our country when we are manufacturing these drugs in our own country, in Rishikesh, in Pimpri and in other places? What is the cost of production of these drugs? The cost of production of M. V. tablet is hardly 16 paise. But it is not available in villages, even a small place in Kashmir....

MR. DEPUTY-SPEAKER : You said, you will confine yourself to only Jammu and Kashmir.

SHRI S. M. BANERJEE : I have mentioned a small place in Kashmir.

I would request the hon. Minister to kindly assure us that the prices will be controlled at least in Jammu and Kashmir, if not in the whole country. We want to have that assurance from him.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA : Sir, as you rightly pointed out, some of the issues referred to by the hon. Members are extraneous so far as this Bill is concerned, because its scope is extremely limited, that is, to extend the provisions of the existing Act to Jammu and Kashmir. I can only assure the hon. Members that the agency or the machinery responsible for controlling the quality of drugs has been strengthened and will be strengthened further.

With these words, I commend the Bill to the acceptance of the House.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill further to amend the Drugs and Cosmetics Act, 1940, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER: We now take up clause-by-clause consideration of the Bill. There are no amendments. So, I put all the clauses together to the vote of the House.

The question is:

"That clauses 2 to 5, clause 1, the Enacting Formula and the Title stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clauses 2 to 5, clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: I beg to move;

"That the Bill be passed"

MR. DEPUTY SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed"

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Today, we are in a happy position. We have disposed of all the business before the next item, before time. Since Mr. Atal Bihari Vajpayee, the mover of the Motion is here and the Minister is also here, we can take up that item.

15.22 hrs.

MOTION RE: STATEMENT ON SUICIDE BY DR. V. H. SHAH, A SCIENTIST OF IARI, NEW DELHI

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर): उपाध्यक्ष महोदय, मै प्रस्ताव करता हूं :—

"कि यह सभा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के एक वैज्ञानिक डा० वी० एच० शाह द्वारा आत्म-हत्या के बारे में कृषि मंत्री द्वारा 9 मई, 1972 को सभा पटल पर रखे गए वक्तव्य पर विचार करती है।"

उपाध्यक्ष महोदय, कृषि मंत्री ने अपने वक्तव्य में डा० शाह की आत्म-हत्या पर शोक प्रकट किया है। इसी प्रकार का एक वक्तव्य आज से लगभग बारह वर्ष पूर्व उस समय के कृषि मंत्री द्वारा इस सदन में दिया गया था, जब डा० जोजफ ने आत्म-हत्या की थी। उस समय कृषि मंत्री श्री पाटिल थे। उन्होंने भी एक वैज्ञानिक की आत्म-हत्या पर मातम मनाया था। उस दुर्घटना को बारह वर्ष बीत गये। एक युग चला गया। इस बीच में दुनिया बदल गई। विज्ञान ने मनुष्य को चन्द्रमा पर पहुंचने की शक्ति प्रदान कर दी। देश में प्रधान मंत्री बदले। कृषि मंत्रियों में भी परिवर्तन हुआ। यह सदन बदला। लेकिन वैज्ञानिकों की आत्म-हत्या की शृंखला नहीं टूटी। बारह वर्ष बाद हम आज फिर गहरे शोक की छाया में इस बात पर विचार कर रहे हैं कि हमारे देश में कोई नौजवान वैज्ञानिक मृत्यु का आलिंगन करने के लिए क्यों विवश होता है।

15.24 hrs.

[SHRI K. N. TIWARI *in the Chair*].

डा० जोजफ की मृत्यु के बाद एक जांच हुई थी। जाच का क्या परिणाम निकला, उस जाच के परिणामस्वरूप कौन से परिवर्तन किए गए, भविष्य में इस तरह कोई नौजवान वैज्ञानिक अपनी जान पर न खेलें, इसकी रोक-थाम के लिए कौन से कदम उठाए गए, इसके बारे में सदन को विश्वास में नहीं लिया गया।

डा० शाह की आत्म-हत्या के पहले भी दो आत्म-हत्यायें हुईं। बंगलौर के डेयरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट में एसिस्टेंट रिसर्च आफिसर के रूप में काम करने वाले डा० एस० एस० बत्रा 28 मार्च, 1970 को आत्म-हत्या करके इस दुनिया से चले गये। वह एक सीनियर व्यक्ति थे, लेकिन उनके सिर पर एक जूनियर व्यक्ति बिठा दिया गया। डायरेक्टर ने उनकी आत्म-हत्या का समाचार तुरन्त नई दिल्ली नहीं भेजा। आत्म-हत्या के पूर्व उन्होंने कौन सा पत्र लिखा, यह भी पता नहीं है। स्पष्टतः